चतुर्थ अध्याय

" शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की समस्याएँ "

चतुर्थ अध्याय

" शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की समस्याएँ "

प्रस्तावना :

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक हम नारी के स्वरूप को देखे तो पता चलता है कि उनमें काफी परिवर्तन आया है । प्राचीन काल की नारी घर सँभालना, बच्चों की देखभाल करना, पति की सेवा करना आदि जिम्मेंदारियाँ निभाती थी । वह शिक्षा तथा घर के बाहरी क्षेत्र से वंचित थी । उसे किसी भी प्रकार के अधिकार या महत्व प्राप्त नहीं था । इसी कारण प्राचीन काल के साहित्य में नारी के इसी स्वरूप तथा इससे संबंधित समस्याओं का चित्रण हमें नजर आता है ।

तो आधुनिक काल में स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद नारी के स्थिति में अच्छा परिवर्तन आने लगा । उसे शिक्षा मिलने लगी जिससे उसमें अपने अधिकारों के प्रति जागृति आने लगी । वह समाज के हर क्षेत्र में जहाँ केवल पुरूषों का वर्चस्व था उसमें प्रवेश करने लगी । वह घर की जिम्मेंदारीयों के साथ साथ बाहरी क्षेत्रों में भी काम करने लगी । उसकी अपनी एक पहचान बनने लगी । जो नारी अब तक अन्याय सहन करती आयी थी वह उसके खिलाफ आवाज उठाने लगी । नारी अपने समस्याओं के खिलाफ खुद लड़ने के लिए खड़ी हो गयी । अतः आधुनिक काल के साहित्य में नारी के इस परिवर्तित रूप और उसकी विशेषताएँ, समस्याएँ आदि का चित्रण होने लगा ।

शंकर शेष जी ने भी नारी के स्थिति में आये इस परिवर्तन तथा समस्याओं को बखूबी अपने नाटकों के जरिए समाज के सामने पेश किया है । शेष जी के नाटकों की नायिकाएँ जीवन में आनेवाली हर मुसीबतों का, समस्याओं का सामना करती हुई नजर आती है, जो उसके अपने अस्तित्व के प्रति सजगता का प्रमाण है । अतः शेष जी के नाटकों की नायिकाओं की समस्याएँ निम्नप्रकार की है :-

4:1 मातृत्व की समस्या :

सृष्टि के क्रम से स्त्री - पुरूष संबंधों के सामाजिक संस्कार का नाम है विवाह । विवाह के बाद हर स्त्री का यह सपना होता है कि वह माँ बने । सृष्टि जितनी सहज और प्रकृत है मातृत्व की भावना उतनी ही सहज और प्रकृत है । परंतु मानव कभी - कभी सहज प्रकृत बातों को भी नकार कर अप्रकृत बातों के पीछे दौड़ता रहता है । परिणाम स्वरूप प्राकृतिक अपूर्णता सहज जीवन को भी अपूर्ण बना देती है । यही बात हमें " **रक्तबीज** " नाटक में नजर आती है । शेष जी के " **रक्तबीज** " नाटक में मातृत्व की समस्या का चित्रण मिलता है । इस नाटक की दोनों नायिकाएँ सुजाता और ललिता इस समस्या से आहत है । सुजाता का पति मि.शर्मा ऐसा आदमी है जो सुविधाओं को पाने के लिए खुद अपनी पत्नी को

नैतिक अधःपतन की ओर धकेलता है । इस संदर्भ में डॉ प्रकाश जाधव का कथन है -"शांडिल्य गोत्रीय शर्मा जैसे व्यक्ति को अगर मैला खाने के लिए कहा जायेगा तो उसे वह कोई खूबसूरत सा टेनिकल नाम देकर खाएगा । " [1] सुजाता को बच्चे बहुत पसंद है, वह माँ बनने के लिए तरसती रहती है । मगर मि. शर्मा उसे बच्चे को जन्म देने नहीं देता क्योंकि सुजाता के सौंदर्य जाल में अपने बॉस को फाँसकर वह तरक्की पाना चाहता है । सुजाता इसके लिए पहले विरोध करती है पर पति के इच्छा के आगे उसे झुकना पड़ता है । सुजाता इस आशा में बॉस के साथ संबंध रखती है कि उसके जरिए उसे मातृत्व का सुख मिल जाए । वह मि. भार्गव माथुर से गर्भवती भी बनती है । पर मि.शर्मा इसे स्वीकार नहीं पाता । इसी कारण जब सुजाता को बाथरूम में गिर पडने से ब्लडिंग शुरू होती है तो मि.शर्मा उसकी कोई मदद ना करते हुए घर के बाहर निकल जाता है । जिससे सुजाता का गर्भपात हो जाता है । सुजाता इस आघात को सह नहीं पाती । तब भी मि.शर्मा उसे धीरज देने के बजाए कहता है -- " वैसे ही बच्चा हमारा नहीं था । पाप का इतिहास छाती पर लादकर जीना तो नहीं होगा अब ।" [2] अतः सुजाता को अपने चारित्र्य की बलि देकर प्राप्त किया हुआ मातृत्व अपने पति के अतिरिक्त महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए खोना पड़ता है ।

उसीतरह नाटक के " **उत्तरार्ध** " की नायिका ललिता का पति शंतनु अपने संशोधन के जरिए दुनिया भर में नाम कमाना चाहता है । वह ललिता का अपनी काम के तृप्ति के लिए तथा सेवा के लिए उपयोग करता है पर उसकी भावनाओं की जरा भी परवाह नहीं करता । इस संदर्भ में डॉ सुरेश गौतम और वीणा गौतम कहते है -- " वह पत्नी सुख को छोड़ बच्चा नहीं चाहता क्योंकि बच्चा उसकी महत्वकांक्षाओं की रखैल को शायद घर में न रहने दे ।" [3] ललिता चाहती है कि अपने बच्चे हो पर पति की इच्छा को अपनी इच्छा माननेवाली ललिता इस बात को अपने पति पर जाहिर नहीं होने देती । अतः ललिता को भी अपने पति की महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए ग्यारह सालों से अपनी मातृत्व की इच्छा को दबाए रखना पडा है ।

4:2 प्रेम की समस्या :

प्रेम मानव हृदय की सबसे उदात्त और पवित्र भावना है । प्रेम हो जाता है, वह किया नहीं जाता, और हो जाने पर फिर उसे भुलाया नहीं जाता । इसमें प्रेमी लोगों को कभी सफलता मिलती है तो कभी असफलता । प्रेम में कई प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न होती हैं । जैसे परिस्थितियाँ, घर के सदस्य या स्वयं प्रेमी ही प्रेम में बाधा बन जाते है । शेष जी के नाटकों में भी यह समस्या दिखाई देती है ।

उनके " **नयी सभ्यता के नये नमुने** " नाटक की नायिकाएँ स्मृति और धरणी दोनों भी ' कृष्ण ' नाम के युवक से प्यार करती है । मगर गहराई और आत्मा के सुर से विहीन उनका प्रेम केवल

आडम्बर मात्र है . क्योंकि वे समझती है कि कृष्ण रईस बाप का बेटा है और इसी कारण दोनों उसकी तरफ आकृष्ट हुई है । जब कि सच्चाई यह है कि कृष्ण मध्यमवर्गीय युवक है जिसे अपने टी. बी. से ग्रस्त बहन का इलाज करना है । उसके लिए उसने स्मृति और धरणी से प्रेम का नाटक करके उनसे पैसे हासिल किए हैं । इससे पता चलता है कि कृष्ण भी उनसे प्यार नहीं करता । पर स्मृति और धरणी दोनों अपने पिता का घर छोड़कर कृष्ण से विवाह करने के लिए उसके घर आ जाती है । तब दोनों भी अपने प्यार की दुहाई दे कृष्ण के साथ विवाह करने के लिए झगड़ा शुरू करती है । तो कृष्ण राह सुझाता है कि तुम दोनों भी मेरे बिना जी नहीं सकती तो तीनों भी जहर खाकर आत्महत्या कर लेते है । लेकिन जब जान पे बन आती है तो दोनों भी जहर पीने से इंकार करती हुई नजर आती है । अतः शेष जी ने स्मृति और धरणी के जरिए उच्चवर्गीय लोगों के खोखले प्रेम को दर्शाया है, जो प्यार भी दिखावे के लिए करते है । अतः इनकी समस्या यह है कि इन्हें प्रेम का सच्चा रूप पता ही नहीं है ।

" **खजुराहो का शिल्पी** " में नजर आता है कि नाटक की नायिका अलका " क्षण के मोह " पर विजय पाने का संदेश देनेवाले मंदिर निर्माण में प्रतिदर्श बनी है और खुद शिल्पी मेघराज आनंद के मोह में पड़ गयी है । अलका दिलोजान से शिल्पी से प्यार करने लगती है । पर शिल्पी मेघराज फिर से इस संसार के मोहजाल में फँसना नहीं चाहता । वह अलका को केवल प्रतिदर्श के रूप में देखता है । अतः शिल्पी मेघराज आनंद अलका से कहता है कि " अलका मैं विवश हूँ । मैं फिर से इस संसार में नहीं लौट सकता ।" [5] और अलका का प्रेम अस्वीकार करता हुआ नजर आता है । अतः अलका के सामने उसका प्रेमी ही समस्या बना हुआ दिखाई देता है, जिसने उसके प्रेम का स्वीकार नहीं किया है ।

" **बंधन अपने अपने** " में चेतना और अनादि दोनों एक दूसरे से प्यार करते है और शादी भी करना चाहते है । पर उनकी शादी इसलिए रूकी हुई है कि अनादि अपने बड़े भाई डॉ. जयंत के शादी के पश्चात विवाह करना चाहता है । पर इसी दौरान अनादि को पता चलाता है कि उसके बड़े भाई चेतना से विवाह करने की कामना रखते है । तब अनादि अपने प्यार की बलि देकर चेतना को डॉ. जयंत से विवाह करने को कहता है । पर चेतना इसे स्वीकार नहीं करती । उसे अनादि की अनंत काल तक प्रतिक्षा करना मंजूर है पर डॉ.जयंत से शादी करना नहीं । चेतना को प्यार एक से करके दूसरे से विवाह करना कतई मंजूर नहीं । यहाँ पर डॉ. जयंत का उनके प्यार के बीच आना समस्या बन गया है क्योंकि चेतना अनादि छोड़कर किसी दूसरे के साथ विवाह नहीं कर सकती और डॉ.जयंत की इच्छा का पता चलने पर अनादि चेतना से विवाह नहीं कर सकता ।

तो " **घरौंदा** " नाटक में हमें नजर आता है कि छाया और सुदीप एक दूसरे को दिलोजान से चाहते है और शादी भी करना चाहते है । पर उनकी शादी में रूकावट डाली है एक घरौंदे ने । क्योंकि

उनका अपना कोई घर नहीं होने के कारण उन्हें शादी के पश्चात रहने के लिए एक छत और चार दीवारों की जरूरत है । इसके लिए दोनों भी एक वक्त बड़ा पाव और दूसरे वक्त राईस प्लेट खाकर पैसे बचाते है । लेकिन "पहली बार बिल्डर पैसे खा जाता है । दूसरी बार छाया का भाई गोविंद अमेरिका जाता है तो पासबुक ही खाली होती है । तीसरी बार मकान मालिक अपनी बेटी के दहेज के लिए आठ हजार हजम करता है ।" [6] इस तरह हर वक्त आनेवाली मुसीबतों के कारण बचाए पैसे खर्च हो जाते है । जिस कारण सुदीप टूट जाता है और षड्यंत्र का सहारा लेता है । वह छाया को उनके फर्म के मालिक मि.मोदी जो दिल के मरीज है उनके शादी के प्रस्ताव को मंजूर करने को कहता है । जिससे उसके मृत्यु के पश्चात उसकी संपत्ति उनकी हो जाए और वे फिर एक - दूसरे से शादी कर सके। छाया भी सुदीप की थकावट जानकर मि.मोदी का प्रस्ताव स्वीकार कर लेती है । यहाँ पर अर्थ ने छाया और सुदीप के प्यार पर मात की हुई दिखाई देती है ।

यहाँ पर शेष ने प्रेम समस्या के चित्रण द्वारा प्रेम बाधाएँ क्यों उत्पन्न होती है इसके अनेक कारणों को उजागर किया है ।

4:3 विश्वासघात की समस्या :

प्यार, विश्वास प्रत्येक इंसान को एक दूसरे से जोडे रखता है। दाम्पत्य संबंधो में एक दूसरे के प्रति विश्वास होना और भी महत्वपूर्ण है । पति -पत्नी का रिश्ता खडा ही विश्वास की नींव पर होता है । पर जब यही विश्वास पति या पत्नी में से एक निभा नहीं पाता तो यह रिश्ता लड -खडा जाता है । उनके रिश्ते में दरार पड जाती है। शेष के कुछ नाटकों की नायिकाओं के साथ भी यही हुआ है। कहीं पर उन्हें पति ने धोका दिया है तो कहीं दूसरे लोगों ने धोखा दिया है ।

शेष के " **रत्नगर्भा** " नाटक में यह समस्या देखने को मिलती है । इला से बेइंतहा प्यार करनेवाला सुनील इला के दुर्घटना से कुरूप बनने पर उससे घृणा करने लगता है । वह इला का प्यार, डॉक्टर के पढाई के लिए अपने गहने बेचकर उसे लंदन भेजना आदि को भूल गया हुआ नजर आता है । इतना ही नहीं सुनील शराबी, जुआरी और वेश्यागामी बन जाता है । वह इला को मारकर उससे छुटकारा पाना चाहता है । पर जब उसे पता चलता है कि इला को उसके मामाजी के मृत्यु के पश्चात साठ हजार रूपये मिल गये है तो यह रूपये हथियाने के लिए वह इला से प्रेम का नाटक करता है । वह इला के लिए वही पहलेवाला सुनील बन जाता है जो उसे अपने पलकों पर बिठाता था । इला को भी अपने पति में आए इस परिवर्तन से विश्वास होता है कि सुनील बदल गया है । पर इला के साथ किये इस नाटक के संदर्भ में सुनील का अपने मित्र जगदीश को टेलिफोन पर यह कहना - " -- हाँ अब इला मुझ पर शत प्रतिशत विश्वास रखने लगी है । हाँ -- हाँ मेरा प्रेम का अभिनय बहुत सफल हो रहा है ।

हाँ वह सोचती है कि मेरा हृदय परिवर्तन हो गया है। क्या कहा ---- मामाजी का रूपया ? हाँ -- हाँ ---- मेरा इला का ज्वाइंट एकाऊंट खुल चुका है। "[7] इला के साथ किए गये विश्वासघात को जाहिर करता है। अतः शारीरिक सुंदरता का उपासक सुनील पैसों के लिए इला के विश्वास को सहजता से तोड़ता हुआ नजर आता है।

" **बिन बाती के दीप** " में विशाखा का पति शिवराज अपनी महत्वकांक्षा के पूर्ति के लिए विशाखा के साथ विश्वासघात करता है। शिवराज विशाखा के अंधेपन का फायदा उठाकर उसके लिखे उपन्यास अपने नाम से छपवाता है और खुद श्रेष्ठ उपन्यासकार बन जाता है। तथा विशाखा को बताता है कि उसके लिखे उपन्यास लोगों द्वारा खूब पसंद किये जा रहे है। चारों तरफ उसके नाम के चर्चे हो रहे है। इतना ही नहीं शिवराज आकाशवाणी से विशाखा के उपन्यासों पर प्रसिद्ध आलोचक मार्तण्ड की वार्ता के कार्यक्रम का नकली कॅसेट बनाकर विशाखा को सुनाता है। तथा पाठकों के खुद के नाम पर आये पत्र विशाखा को इस तरह सुनाता है कि पाठकों ने विशाखा को ही लिखें हैं। यह सब शिवराज इसलिए करता है ताकि विशाखा यह समझती रहे कि उसके लिखे है उपन्यास तथा वह मशहूर हो गयी है। साथ ही उसके धोके का पता विशाखा को न चले। शिवराज की हवस इतनी बढ़ जाती है कि वह विशाखा के आँखों में गलत दवा डलवाकर उसे अंधी ही बनाये रखता है। अतः राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित होने के लिए शिवराज विशाखा का साधन की तरह इस्तेमाल करता है। तथा विशाखा को इससे बिल्कुल अनभिज्ञ रखकर उसके विश्वास को बड़ी आसानी से तोडता हुआ नजर आता है।

इसी प्रकार " **रक्तबीज** " में भी मि. शर्मा ने पत्नी सुजाता का इस्तेमाल कर उससे विश्वासघात किया है। अपने अमीर बनने की महत्वकांक्षा की पूर्ति वह सुजाता के रूप --सौंदर्य में पाता है। मि. शर्मा सुजाता को अपने बॉस मि. माथुर के साथ अनैतिक संबंध रखने के लिए मजबूर करता है। पर इसी संबंध के कारण सुजाता गर्भवती बनती है, तो उस बच्चे को स्वीकार कर नहीं पाता। इसी कारण बाथरूम में गिर पडने से सुजाता को ब्लडींग शुरू होती है तो मि. शर्मा वैसे ही बैठा रहता है वह नहीं चाहता की यह बच्चा इस दुनिया में आये। पर सुजाता के बहुत चिखने-चिल्लाने पर टैक्सी लाने जाता है तो श्याम तक लौट कर नहीं आता। जिस कारण सुजाता का बच्चा गिर जाता है। मि. शर्मा सुजाता का इस्तेमाल कर नौकरी में तरक्की पाता तो है पर सुजाता के मातृत्व की इच्छा को पूरा नहीं करता। अतः सुजाता के साथ ऐन मौके पर मि. शर्मा ने किये इस विश्वासघात के कारण उसे अपना बच्चा खोना पडता है।

" **कोमल गांधार** " में गांधारी के साथ उसके विवाह को लेकर विश्वासघात किया गया है । उसका स्वयंवर ना रचाकर उसके पिता को बहुत सारा धन देकर उसे अंध धृतराष्ट्र के साथ विवाह करने के लिए हस्तिनापुर लाया जाता है । गांधारी को धृतराष्ट्र के अंधेपन से पूरी तरह अनजान रखा जाता है । जब गांधारी को इस बात का पता चल जाता है तो वह इसे सहन नहीं कर पाती और हमेशा के लिए अपने आँखो पर पट्टी बाँधकर संसार से मुँह मोड़ लेती है । अतः यहाँ पर कुरूकुल के प्रतिष्ठा के लिए, उनका वंश चलाने के लिए गांधारी को दंड़ित होना पड़ा है ।

इस तरह शेष ने अपने इन नाटकों के जरिए हमारे समाज की स्त्री को व्यक्ति न समझकर एक साधन की तरह इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति को उजागर किया है । साथ ही स्त्री की भावनाओं की कद्र न करते हुए उसके विश्वास को सहजता से तोड़ना इस पुरूष की प्रवृत्ति को दर्शाया है । जिस कारण स्त्री को युगों से पुरूष के आगे दबना पड़ा है । तथा उसके अत्याचारों को सहन करना पड़ा है ।

4: 4 पतिद्वारा पत्नी के शोषण की समस्या :

पति की अपनी पत्नी को अर्धांगिनी ना समझते हुए उसे अपनी दासी तथा गुलाम समझने की प्रवृत्ति तथा स्वार्थी वृत्ति इस समस्या का मूल कारण है । जो अपने फायदे के लिए पत्नी का साधन की तरह उपयोग कर लेने में जरा भी शर्म महसूस नहीं करता । इसी कारण इस गलत धारणा पर चलनेवाले लोगों का दाम्पत्य जीवन असफल दिखाई देता है ।

शेष के " **बिन बाती के दीप** " नाटक में शिवराज अपनी महत्वकांक्षा के पूर्ति के लिए विशाखा के अंधेपन का फायदा उठाता है । वह विशाखा के लिखे उपन्यासों को अपने नाम से छपवाकर दुनिया की नज़रों में खुद महान लेखक बन जाता है । साथ ही उसकी आँखे कभी ना ठीक हो इसलिए गलत दवा ड़ालता रहता है । इसी कारण जब उनका मित्र आनंद विशाखा को आँखो के इलाज के लिए शिमला ले जाना चाहता है तो वह चिंतित हो उठता है । क्योंकि उसने किया हुआ धोखा सामने न आये । इस संदर्भ में शिवराज का टाइपिस्ट मंजू से यह कहना -- " ---- तीन साल तक जो गलत दवा तुमने और मैंने ड़ाली है, वह विशाखा की आँखे अच्छी न होने देगी । विशाखा अंधी रहेगी । उसे हमारे लिए अंधी रहना चाहिए ।" [8] शिवराज के स्वार्थी वृत्ति को दर्शाता है । जिसने अपनी पत्नी का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक शोषण बेशर्मी से किया है ।

यही बात " **रक्तबीज** " में भी नजर आती है । मि.शर्मा भी अपनी पत्नी सुजाता का अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करता है । मि.शर्मा कम समय में अमीर आदमी बनना चाहता है वह भी बिना मेहनत किये । इसका सीधा सरल रास्ता वह सुजाता के रूप सौंदर्य में पाता है । वह जानता है कि उसके बॉस की कमजोरी स्त्री है । वह सुजाता को अपने बॉस मि.माथुर के साथ अनैतिक

संबंध रखने के लिए मजबूर करता है । जिसके बदले उसे हासिल होता है पैकिंग डिपार्टमेंट में असिस्टंट मैनेजर का पद तथा कार, फ्रिज, टी.वी.,फर्नीचर और फ्लैट। सुजाता को यह सब मंजूर नहीं इसी कारण प्रारंभ में इसका विरोध करती है । पर पति के इच्छा के आगे उसे झुकना पड़ता है । लेकिन इन्हीं संबंधो की वजह से सुजाता गर्भवती बनती है, तो मि.शर्मा इसे स्वीकार नहीं पाता । मि.माथुर का भी सुजाता के प्रति आकर्षण खत्म हो जाता है । अतः सर्वहारी सुजाता को मौत को गले लगाना पडता है इससे पता चलता है कि सुजाता का भावनिक, शारीरिक शोषण तो हुआ ही है साथ ही उसे अपने शील तथा जीवन की बलि भी मि.शर्मा के महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए देनी पड़ती है ।

उसी तरह नाटक के " उत्तरार्ध " की नायिका ललिता का इस्तेमाल उसके पति शंतनु ने किया हुआ दिखाई देता है । अपना रिसर्च " **फॉरेन जर्नल्स** " में छापकर दुनिया भर में नाम कमाने की महत्वकांक्षा डॉ शंतनु की है । इस महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए उसने ललिता को ग्यारह साल मातृत्व से वंचित रखा है क्योंकि बच्चा होने पर चौबीस घंटे उसकी हाजिरी में उसे अपनी पत्नी नहीं मिलती । अतः शंतनु खुद की दिन रात सेवा के लिए पत्नी तो चाहता है पर पत्नी की इच्छा-आकांक्षाओं की उसे कोई परवाह नहीं । डॉ शंतनु पत्नी की इच्छाओं को मारकर संशोधन करता रहता है। यहाँ पर हमें नजर आता है कि ललिता का पतिद्वारा शारीरिक, मानसिक, भावनिक शोषण हुआ है।

अतः सुजाता तथा ललिता को मातृत्व से वंचित रखकर उनका शोषण किया गया है तो " **कोमल गांधार** " में पुत्र प्राप्ति के लिए गांधारी का शोषण हुआ है । गांधारी को धोखे में रखकर उसका विवाह अंधे धृतराष्ट्र के साथ इसलिए किया जाता है कि राज्य चलाने के लिए वारिस प्राप्त हो । इसी कारण इस धोखे से व्यथित गांधारी संसार तथा धृतराष्ट्र के प्रति उदासीन रहती है । फिर भी धृतराष्ट्र गांधारी के मन का विचार किये बिना पति का अधिकार जताने उसके पास चला जाता है । तब गांधारी का यह कथन -- " मुझे धन ---- और प्रपंच के बाद खरीदे गए इस शरीर का कुछ तो उपयोग होना ही चाहिए । " [9] उसकी व्यथा प्रगट करता है । अतः यहाँ गांधारी के सत्व को नकार कर उसे केवल संतान उत्पन्न करनेवाली मशिन समझकर उसका पति तथा समाज द्वारा हुआ शोषण दिखाई देता है ।

शेष ने इन नाटकों में इस समस्या का उद्घाटन कर बताया है कि स्त्री के अस्तित्व को नकार उस पर अन्याय, अत्याचार, तथा शोषण करने की यह प्रवृत्ति युगों से चली आ रही है । महाभारत काल से लेकर आज तक इस समस्या के विरूद्ध कितने ही आंदोलन हुए फिर भी पुरूषों की मानसिकता में ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है ।

4: 5 नैतिकता की समस्या :

स्त्री को इस समस्या का सामना तो करना ही पड़ता है क्योंकि यह समस्या उसके घर से बाहर निकलने पर ही निर्माण नहीं होती तो घर से भी शुरू होती है। कभी कभी घर के लोग ही स्त्री को खुद अपने फायदे के लिए नैतिक अधःपतन की ओर धकेलते हुए नजर आते हैं। इसी कारण स्त्री को इस समस्या से हर युग में जुझना पड़ा है। इससे वह छुटकारा पाना चाहती है। पर कभी उसे सफलता हासिल हुई तो कभी असफलता मिली है।

शेष के " **मूर्तिकार** " नाटक में इस समस्या का सामना नायिका ललिता को करना पड़ा है। वे छ.महिने का किराया नहीं दे पाते तो मकान मालिक इसके ऐवज में ललिता को खरीदना चाहता है। वह हरदम अपने मुंशी को ललिता के पास भेजकर उसे परेशान करता रहता है। हर तरह के प्रलोभन देकर उसे बहकाने की कोशिश करता है। पर अपने शील तथा चारित्र्य के प्रति सजग ललिता इस बात को गँवारा नहीं करती। इसी कारण वह मुंशी को चाटा मारती है। तब आगबबूला हुआ मुंशी उसे धमकी देता है कि --------" देखता हूँ तुम सेठजी के कदमों में कैसे नहीं झुकती।" [10] और वहाँ से चला जाता है। अतः यहाँ आर्थिक समस्या से नैतिकता की समस्या उत्पन्न हुई नजर आती है। जिससे ललिता को जुझना पड़ा है। अंत तक इस समस्या से वह संघर्ष करती हुई नजर आती है।

" **रत्नगर्भा** " में सुनील के अनैतिक बर्ताव के कारण इला का दाम्पत्य जीवन टूटता हुआ नजर आता है। सुनील इला के कुरूपता को स्वीकार कर नहीं पाता। मांसल शरीर तक सौंदर्य दृष्टि रखनेवाला सुनील इला से नफरत करने लगता है। साथ ही जगदीश जैसे मित्र के संगत में पडकर वह शराबी, जुआरी और वेश्यागामी बन जाता है। इला सुनील को इन गलत रास्तों पर चलने रोकना चाहती है, पर खुद को असमर्थ पाती है। इला का माया से यह कहना --" भला मैं क्या अब लड़ सकती हूँ माया। विधाता ने कुरूप बनाकर मेरे सब हथियार छीन लिए है।" [11] उसकी विवशता को व्यक्त करते है यहाँ पर एक दुर्घटना से कुरूप बनी इला के सामने अपने पति सुनील के अनैतिक आचरण के कारण नैतिकता की समस्या खड़ी हुई है। जिससे निकलने का कोई रास्ता इला को नजर नहीं आ रहा है।

" **रक्तबीज** " में पूर्वाद्ध की नायिका सुजाता को खुद उसका पति नैतिक अधःपतन की ओर धकेलता हुआ नजर आता है। मि.शर्मा अपनी मध्यवर्गीय जीवन से असंतुष्ट है। वह बड़ा आदमी बनने की महत्वकांक्षा रखता है। अतः इसके लिए वह सुजाता का एक साधन की तरह इस्तेमाल करता है। वह सुजाता को अपने बॉस मि.माथुर के साथ अनैतिक संबंध रखने के लिए मजबूर करता है। सुजाता पहले इस बात को स्वीकार नहीं करती। पर पति के इच्छा के आगे उसे झुकना पड़ता है। सुजाता को

भौतिक सुख --सुविधाओं को हासिल करने के लिए अपना शील दाँव पर लगाना पड़ता है । यहाँ पर नैतिकता की समस्या घर से ही शुरू हुई है । मि.शर्मा ऐसे वर्ग का आदमी है जो अपनी तरक्की के लिए अपनी पत्नी का सहारा लेता है तथा उसके चारित्र्य को दाँव पर लगाने में भी कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करता । सुजाता भी न चाहते हुए भी पति की इच्छा के खातिर इस अनैतिकता को स्वीकार करती हुई नजर आती है ।

"**पोस्टर**" में दिखाई देता है कि जब गाँव का पटेल गलत इरादे से चैती को अपनी हवेली में डयूटी पर रख लेता है तो चैती इसका विरोध करती है । अब तक गाँव के किसी भी स्त्री या पुरूष ने पटेल के आदेश का विरोध नहीं किया है । पर अपने चारित्र्य के प्रति सजग चैती को पटेल की रखैल होना कतई मंजूर नहीं । चैती अपने पति को कह देती है कि वह हवेली कभी नहीं जायेगी तथा वो भी अपनी मुकादम की नौकरी पटेल को वापस कर दे । कल्लू इसमें चैती का पूरा-पूरा साथ देता है । दोनों मिलकर पटेल के खिलाफ लड़ने की सोचते है । यहाँ पर हमें नजर आता है कि पत्नी के चारित्र्य रक्षण के इस लड़ाई में कल्लू उसके साथ है । तथा खुद चैती भी अपने पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठायी है तो " **रक्तबीज** " में बिल्कुल इसके उल्टे है । वहाँ खुद पति सुजाता को नैतिक अधःपतन के लिए प्रेरित करता है तथा सुजाता भी इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने में खुद को असमर्थ पाती है ।

" **चेहरे** " की नायिका अध्यापिका के सामने भी यह समस्या दिखाई देती है जो वेश्याव्यवसाय छोड़ स्कूल में अध्यापन का काम करते हुए अपनी जिंदगी गुजर रही है । अध्यापिका ने अपने सारे पैसे तथा गहने इन्हीं स्कूल तथा आश्रम खोलने के लिए दे दिये थे क्योंकि वह बची हुई जिंदगी सन्मान के साथ जीना चाहती थी । वह समाजसुधारक भरोसे जी के साथ पिछले बीस सालों से रहकर यह कार्य कर रही है । पर जब भरोसे जी की मृत्यु होती है, तो गाँव के लोग अध्यापिका और भरोसे जी के संबंधों को लेकर गलत बातें करने लगते है । तो अध्यापिका इसे चुपचाप सहन ना करते हुए गाँववालों को मुँहतोड जवाब देती है तथा पूछती है कि " क्या हमें अतीत की लाश को कन्धे से उतारकर नई सार्थक जिंदगी जीने का हक नहीं था ? " [12] अतः अध्यापिका का अपना बुरा व्यवसाय छोड़ अध्यापन का पवित्र काम करने पर भी लोग उसे गलत समझते हुए नजर आते है । शेष ने यहाँ पर यह बताने की कोशिश की है कि अगर कोई व्यक्ति बुराईयों को छोड़ कर अच्छी जिंदगी बीताना चाहता है तब भी लोग उसके पूर्व कर्मों को ना भूलते हुए उस पर संदेह करते है ।

शेष ने इन नायिकाओं के जरिए नारी के जीवन में आनेवाली इस समस्या के विविध रूपों को दर्शाया है ।

4:6 राजनीतिक समस्या :

शेष ने अपने नाटकों में राजनीतिक समस्याओं का भी चित्रण किया है । उनके " **कालजयी** " और " **अरे ! मायावी सरोवर** " की नायिकाएँ राजनीतिक समस्याओं के साथ सक्षमता से संघर्ष करती हुई नजर आती है तो " **कोमल गांधार** " की गांधारी का जीवन राजनीतिक षड्यंत्र के कारण नरक बना हुआ नजर आता है ।

" **कालजयी** " नाटक में कालजयी एक ऐसा राजा है जिसके अन्याय और अत्याचार से सारी प्रजा त्रस्त हो चुकी है।" अपने वैभव में मस्त कालजयी को न प्रजा की चिंता है न राज कारोबार की "[13] कालजयी अपने इस शासन को खत्म करने की मनिषा रखनेवाले लोगों को बड़ी निर्ममता से मार देता है ताकि प्रजा के दूसरे लोगों पर उसकी दहशत बैठ जायें । इसी अत्याचारी शासन को खत्म करने के लिए निर्माण हुए " प्रजातंत्र " दल की एक सदस्या पुरबी है । वह भी अन्यायी कालजयी को तथा उसके शासन को खत्म करना चाहती है । इसके तहत जब उसे कालजयी के मृत्यु का रहस्य का दायित्व सौंप जाता है तो इस कार्य को पूरा करने के लिए उसे अपने सहयोगियों को तथा प्रेमी को भी मौत के घाट उतारना पडता है । तो भी पुरबी पिछे नहीं हटती और कालजयी के मृत्यु का रहस्य जानकर ही रहती है । अतः इस राजनीतिक समस्या को खत्म करने के लिए पुरबी को बहुत बड़ी किमत चुकाती नजर आती है । आखिर पुरबी के हाथों ही कालजयी की मृत्यु हो जाती है ।

" **अरे ! मायावी सरोवर** " में हमें नजर आता है विचित्र वन के ऐंद्रजालिक सरोवर में नहाने से राजा इल्वलु स्त्री बन जाता है । स्त्री बना इल्वलु वापस चेतनानगर लौटना नहीं चाहता । तब यह समस्या खड़ी होती है कि राज्य का सारा कारोबार कौन देखेगा ? ऐसी समस्या की घड़ी में रानी सुजाता साहस के साथ इसका सामना करती हुई नजर आती है । वह अकेली राज्य वापस लौटती है और गृहस्थी के साथ -- साथ राज्य का शासन भी बड़ी कुशलता से चलाती है । तो दूसरी राजा इल्वलू अपनी यात्रा वैसे ही जारी रखता है । यहाँ पर रानी सुजाता खुद की सक्षमता के कारण ही इस समस्या से राह निकाल पायी है ।

" **कोमल गांधार** " में गांधारी को राजनितीक समस्या को हल करने के लिए अपने जीवन के साथ साथ इच्छा आकांक्षाओ की बलि देनी पड़ती है क्योंकि वंश को आगे बढाने के लिए गांधारी के साथ षड्यंत्र करके धृतराष्ट्र के साथ विवाह के लिए उसे लाया जाता है । उसे इस बात से अनजान रखा जाता है कि उसका होनेवाला पति अंधा है । गांधारी को धोखे में रखकर उसका विवाह धृतराष्ट्र के साथ किया जाता है । उसका सारा जीवन अंधे धृतराष्ट्र के साथ जोड़ दिया जाता है । इस सच्चाई को जानने के बाद गांधारी व्यथित हो सदा के लिए अपने आँखो पर पट्टी बाँधकर इस संसार से मुँह मोड़

लेती है । पर गांधारी की इस प्रतिक्रिया को उसका महान त्याग कह कर उसे महासती के पद पर बैठा दिया जाता है । जिस कारण गांधारी आजन्म अपनी ही प्रतिज्ञा में बंदी बन जाती है । अतः राजनीतिक समस्या के हल के लिए गांधारी का एक यंत्र की तरह इस्तेमाल किया गया है जिससे वह आजन्म बाहर नहीं निकल पायी है ।

4: 7 नारी स्वतंत्रता की समस्या :

यह समस्या स्त्री के सामने युगों से चली आ रही है । हमारे समाज में ज्यादातर पुरूषप्रधान कौटुंबिक व्यवस्था होने के कारण स्त्री को दुय्यम स्थान ही प्राप्त हुआ है। इसी वजह से जितने अधिकार पुरूषों को प्राप्त हुए है उतने स्त्री को नहीं । पुरूषों ने हमेशा स्त्री को अपनी अर्धांगिनी मानने के बजाए अधीन मान कर उनकी स्वतंत्रता छीनी हुई नजर आती है । स्त्री के भाव -भावनाओं को उसकी निर्णय क्षमता को कम महत्व दिया जाता रहा है । तथा जब भी स्त्री ने अपने स्वातंत्र्य के प्रति, अधिकार के प्रति आवाज उठायी है उसे कुचलने की कोशिश की गयी है । फिर भी इससे आज की स्त्री राह निकालती हुई नजर आती है । अतः जो सक्षम है वह इस लड़ाई में जीत जाती है और जो कमजोर पड़ जाती है वह हार जाती है । इस वास्तविकता को शेष ने भी नकारा नहीं है । अतः उनके नाटकों की नायिकाएँ भी इससे जुझती हुई दिखाई देती है ।

" **रक्तबीज** " में पूर्वाद्‌ध की नायिका सुजाता के भाव- भावनाओं की पर्वा ना करते हुए खुद उसका पति मि.शर्मा उसे साधन की तरह इस्तेमाल करता हुआ नजर आता है । मध्यवर्गीय जीवन से असंतुष्ट मि.शर्मा जल्द से जल्द अमीर बनने के लिए सुजाता के शील को दाँव पे लगाता है । इस निर्णय में उसने सुजाता को किसी बात की खबर पहले नहीं दी है । उससे इस बारे में पूछा भी नहीं है । मि. शर्मा सुजाता का इस्तेमाल कर नौकरी में तरक्की पाता है । यह सब हासिल करने के लिए वह सुजाता को मातृत्व सुख से वंचित रखता ही है, दो बार उसका बच्चा भी गिरा देता है । मि.शर्मा सुजाता की कोई भी परवाह ना करते हुए उसे अपने फायदे के मुताबिक रहने के लिए मजबूर करता है । सुजाता को बॉस के साथ अनैतिक संबंध रखना स्वीकार नहीं है इस कारण वह इसका विरोध भी करती है । पर आखिर में उसे पति के इच्छा के खातिर यह बात स्वीकारनी पड़ती है । यहाँ पर शेष जी ने दर्शाया है कि सुजाता का अपनी इच्छानुसार जीवन जीने का अधिकार मि. शर्मा ने छीन लिया है । उसकी स्वतंत्रता भी छीन ली है । जिस कारण आखिर में सुजाता नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या कर लेती है । अतः भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए मि.शर्मा अपनी पत्नी का शील दाँव पर लगाता है । उसे ऐसी स्थिति तक पहुँचाता है कि वह आत्महत्या कर के लिए मजबूर होती है ।

" **पोस्टर** " के चैती द्‌वारा शेष ने उन तमाम आदिवासी स्त्रियों की व्यथा प्रगट की है जिनकी इज्जत वहाँ के जमींदार, गाँव के मुखिया खुले आम लूटते है । चैती को बिना पूछे गाँव का जमींदार पटेल उसकी डयूटी हवेली पर लगा देता है । जिसकी आड़ में वह चैती को अपने लिए तथा मेहमानों के लिए इस्तेमाल करना चाहता है । यह परंपरा वहाँ सदियों से चली आ रही है । मजदूर लोगों को भी अपने बीवीयों का गलत इस्तेमाल होते हुए देखना आम बात है। वे स्वीकार कर चुके है कि अपनी बीवीयाँ पटेल की रखैल हुई तो क्या हुआ ? यह कोई नयी बात तो नहीं है क्योंकि जिनके पास दो वक्त की रोटी जुटाना मुश्किल है वे क्या लडेंगे जमींदार से ? मगर स्वाभिमानी चैती को यह बात स्वीकार नहीं । वह पटेल के आदेश का विरोध करती है । उसका पति कल्लू भी उसमें उसका पूरा साथ देता है । पर इस विरोध से गुस्सा हुआ पटेल कल्लू को पीटता है। पुलिस बुलाकर उसे तथा उसका साथ दिये दूसरे मजदूरों को भी गिरफ्तार करा देता है । तथा अपने शील को जी जान से बचाने की कोशिश करनेवाली चैती को पटेल के गुंडे चैती को पटेल के गुंडे हवेली पहुँचा देते है । अतः गरीबी के कारण चैती का अपने शील के रक्षा के लिए किया गया संघर्ष चल दिया जाता है ।

यही बात " **चेहरे** " में भी दिखाई देती है । इसकी नायिका अध्यापिका समाजसुधारक भरोसे जी का साथ मिलने पर वेश्या व्यवसाय छोड स्कूल में अध्यापन का काम करती नजर आती है । वह संकल्प करती है कि बची हुई जिंदगी वो समाज के सेवा में लगायेगी । जब भरोसे जी अध्यापिका के सामने शादी का प्रस्ताव रखते है तो उसे स्वीकारने की इच्छा होते हुए भी उसे अस्वीकार करती हुई नजर आती है क्योंकि वह जानती है कि उसके पूर्व जिंदगी को देखते हुए समाज उसे स्वीकार नहीं करेगा । साथ ही भरोसेजी को भी इस विवाह से पछताना पड सकता है क्योंकि समाज भी उनकी तरफ ऊंगली उठाकर उन पर किचड़ उछाल सकता है । जिससे उनकी प्रतिमा को धक्का लग सकता है। अतः यहाँ अध्यापिका के जरिए शेष ने उन तमाम वेश्या व्यवसाय करनेवाली स्त्रियों की व्यथा को प्रगट किया है जो यह व्यवसाय छोड़कर एक अच्छी जिंदगी तथा अपना घर संसार बसाना चाहती है । पर समाज के लोग उन्हें यह मौका नही देते ।

" **कोमल गांधार** " में तो गांधारी से उसका मन चाहा पति चुनने का अधिकार ही नहीं छिन लिया गया, उसके स्वतंत्र अस्तित्व को ही नकारा गया है । षड्‌यंत्र रचकर गांधारी को गांधार से हस्तिनापुर विवाह के लिए लाया जाता है। उसे इस बात से बिल्कुल अनजान रखा जाता है कि उसका होनेवाला पति अंधा है । फिर भी विवाह के एक दिन पहले गांधारी को उसी की दासी से पता चलता है कि धृतराष्ट्र अंधा है । इस बात को सुनकर गांधारी को बहुत बड़ा धक्का पहुँचता है । वह उससे व्यथित हो जाती है । इसके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों दंडित करना चाहती है तथा अपने पर हुए अन्याय

का प्रतिशोध लेने का निश्चय करती है । पर उसे ठिक से कार्यान्वित नहीं कर पाती । इसी कारण विवाह मंडप में विवाह करने से इंकार कर वहाँ से उठने के बजाए अपनी आँखों पर सदा के लिए पट्टी बाँधकर अपने विरोध को व्यक्तिगत तौर पर दिखाकर रह जाती है । फिर भी उसकी व्यथा को कोई नहीं समझ पाता । उसकी इस प्रतिक्रिया को भी राजनीतिक दृष्टी से देखकर उसे " महासती " का नाम देकर उसकी जयजयकार की जाती है । जिस कारण गांधारी अपनी ही प्रतिज्ञा के शाप में बँध जाती है । इस संदर्भ में गांधारी का धृतराष्ट्र से यह कहना --"अब मेरी प्रतिज्ञा आपके परिवार की प्रतिष्ठा से जुड़ गयी है । मेरा निजी जीवन खो गया है।"[14] यही दर्शता है कि वह अपनी स्वतंत्रता सदा के लिए खो बैठी है अतः यहाँ पर हमें नजर आता है कि गांधारी से उसका मन चाहा पति चुनने का अधिकार तो छीन लिया ही था । साथ ही उसे " महासती " के आसन पर बिठाकर उसको उसी के प्रतिज्ञा के किले में बंदी बना दिया जाता है जिसमें वह केवल छटपटा सकती है पर मुक्त नहीं हो सकती ।

इस प्रकार शेष ने अपने नाटकों के जरिए यह बताने की कोशिश है कि नारी अपनी स्वतंत्रता के लिए, अपने अस्तित्व के लिए युगों से लड़ती आयी है । फिर भी इस पुरूष प्रधान संस्कृति के पुरूष स्त्री को उसका अधिकार देने के बजाए देवी, महासती आदि नाम देकर उसे मंदिरों में प्रतिष्ठित करके उसकी स्वतंत्रता को छीनता आया है । आधुनिक स्त्री इस मोहजाल को समझ गयी है तथा उससे निकलने की कोशिश भी कर रही है । अतः यह उसकी शुरूवात है उसे अनेक कठिनाईयों का सामना कर अपनी स्वतंत्रता पानी अभी भी बाकी है ।

4:8 आर्थिक समस्या :

अर्थ ही मनुष्य के जीवन को संचालित करता है । ज्यादा तर मनुष्य की सामाजिक प्रतिष्ठा अर्थ पर ही ठहरायी जाती है । इस संदर्भ में योगेश सूरी का यह कथन द्रष्टव्य है कि," समाज और व्यक्ति के कार्य कलाप अर्थ के सहारे ही चलते है ।" [15] व्यक्ति के पारस्पारिक संबंधों में अर्थ महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । अगर किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो तो उसके सगे-संबंधी उससे दूर भागते हुए नजर आते है । इतना ही नहीं पति-पत्नी के रिश्ते में भी आर्थिक समस्या के कारण दरार पड़ी हुई दिखाई देती है । आर्थिक समस्या दूसरे अनेक समस्याओं को जन्म देती है । अतः ऐसा कहना अनुचित न होगा कि आर्थिक समस्या अन्य समस्याओं की जननी है । शेष के नाटकों की नायिकाएँ भी इस समस्याओं से सामना करती हुई नजर आती है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " में हमें दिखाई देता है कि ललिता का पति शेखर कला के आदर्शों से गिर कर तथा अपनी कला को बेचकर पैसा कमाना नहीं चाहता । आमदनी का दूसरा कोई साधन भी उपलब्ध नहीं है । ऐसी स्थिति में उनके घर के आर्थिक हालात बहुत बुरे बन गये है । घर में

दूध,शक्कर,चायपत्ती, आटा आदि कि कमी है तथा वे छ महिने का किराया भी नहीं दे पाये है। ललिता तो एक ही साड़ी धो-धो कर पहनती है जो कही जगहों से फटी है। ललिता इस आर्थिक समस्या से संसार को उबारने को शेखर को समझाती हुई नजर आती है कि उसे अपनी कला के साथ-साथ आमदनी का भी कुछ इंतजाम करना चाहिए क्योंकि जिंदा रहने के लिए खाना और खाने के लिए पैसे कमाना बेहद जरूरी है। इसी कारण शेखर को कहती है कि, " --------------पर अपने कलाकार का अभिमान कायम रखकर उससे अपनी आमदनी का इंतजाम करो कि ------ यह घर चल सके। [16] अतः आर्थिक समसया से जुझती हुई ललिता शेखर को व्यावहारिकता तथा जीवन की वास्तविकता का ज्ञान कराती हुई नजर आती है।

" **रत्नगर्भा** " में हीं नजर आता है कि अर्थ के अभाव ने सुनील को अपनी पत्नी इला के हत्या के लिए प्रेरित किया है। कभी सुंदरता की मूरत इला से बेइंतहा प्यार करनेवाला सुनील उसके कुरूप बनने पर उससे घृणा करने लगता है। इतना ही नहीं जगदीश जैसे कुकर्म करनेवाले इंसान के बुरी संगत में पडकर शराबी,जुआरी और वेश्यागामी बन जाता है। डॉक्टर बने सुनील के चारित्र्य पतन की कोई सीमा नहीं रहती और इन्हीं बुरी आदतों के लिए वह इतना पैसा लुटाता है कि उसके सिर पर ढ़ेर सारा कर्जा हो जाता है। जिन्हें चुकाने के लिये सुनील के पास एक भी पैसा नहीं बचता। जब इस आर्थिक कठिनाईं से रास्ता निकालने के लिए जगदीश सुनील को यह राह सुझाता है कि इला को मारकर उसके बीमें की रकम से सारे कर्जे चुकाये जा सकते है। तो सुनील इसके लिये राजी हुआ दिखाई देता है। सुनील इला को स्लो पॉयझन देते हुए भी हिचकिचाता नहीं। इससे शेष ने यही बताया है कि अर्थ का अभाव मनुष्य को कितना पतित बना देता हैं। जिसने एक पति को अपनी पत्नी की हत्या के लिए प्रेरित किया है।

यही समस्या " **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू के सामने खड़ी होती है। जब उसके पति अजय को मजदूर आंदोलन में भाग लेने के कारण पुलिस पकड़ कर ले जाती है। अजय के सिवाय उसका कोई भी नहीं है। अतः मंजू को रोजी - रोटी के लिये नोकरी की तलाश करनी पड़ती है। तब हिम्मत न हारते हुए मंजू बड़े साहस के साथ नोकरी ढूँढने के लिए अपना गाँव छोडकर दूसरे शहर की ओर चल पड़ती है। पर दुर्भाग्य वश वहाँ गुंडों के चंगुल में फँस जाती है। लेकिन तभी प्राणनाथ नामक युवक उसे गुंडों से बचा लेता है तथा अपने घर में रहने की जगह भी देता है। पर इस शर्त पर की मंजू को इसकी बीवी होने का नाटक करना पड़ेगा। यहाँ हमें नजर आता है कि मंजू को आर्थिक समस्या के साथ -साथ नैतिकता की समस्या से भी जुझना पड़ रहा है।

" **बाढ़ का पानी** " की नायिका लछमी के घर में भी दो जोड़ी कपडे की भी कमी हैं । जिस कारण छितू के कपड़े बरसात से भीगने पर लछमी उसे दूसरी धोती नहीं दे पाती । बरसात से बचने के लिए गाँव के लोग लछमी के टीले पर तथा झोंपड़ी में आश्रय लेते हैं, तो उन्हें देने के लिए उसके पास कंबल भी नहीं है। लेकिन आर्थिक हालात खराब होने पर भी लछमी तथा उसके घर के लोग गाँव के लोगों की हर तरह से सहायता करते हैं । अपने पास जो कुछ भी बचा अनाज है, वह गाँव के लोगों को खिलाते हैं, अतः शेष ने यहाँ पर गरीब लोगों के आर्थिक समस्या को तो दर्शाया हैं साथ ही उनकी इंसानियत को भी उजागर किया है । जिसकी कमी हमें अमीर लोगो में दिखाई देती हैं।

तो " **घरौंदा** " नाटक के जरिए शेष ने बंबई में रहनेवाले मध्यमवर्गीय इंसान के यथार्थ जीवन को अंकित किया हैं । महानगर के एक कमरे में रहनेवाले लोगों की जीवन यातना असह्य हैं। जिनके पास रहने के लिए न घर है न खाने के लिए पूरी तरह खाना । इसी कारण घर का हर सदस्य कुछ ना कुछ काम करके पैसे कमाता हुआ नजर आता है । छाया के सामने भी यही समस्या है । उसके घर के एक ही कमरे में छः लोग रहते हैं । तथा हर कोई चाहता है कि दूसरा घर से ज्यादा से ज्यादा बाहर रहे ताकि उसे एकांत मिलें । घर के आर्थिक हालात खराब होने के कारण छाया भी " मोदी एंड कंपनी" में टाईपिस्ट की नोकरी करती हुई दिखाई देती है,जो अपने घर के आर्थिक हालातों को सुधारने में प्रयत्नरत है ।

पर इसी आर्थिक समस्या के कारण " **रक्तबीज** " के पूर्वाद्ध की नायिका सुजाता को अपने शील की बलि देनी पडती है क्योंकि मध्यमवर्गीय जीवन से असंतुष्ट मि.शर्मा इससे छुटकारा पाने के लिए सुजाता को अपने बॉस के साथ नाजायज संबंध रखने के लिए मजबूर करता है । पहले सुजाता उसे विरोध करती है क्योंकि वह मेहनत,ईमानदारी में विश्वास रखती है और इसके बलबुते पर वह जिंदगी जीना चाहती है। पर भौतिक सुख -सुविधाओं को जल्द से जल्द पाने की मि. शर्मा की अतिरिक्त महत्वाकांक्षा के आगे सुजाता को झुकना पड़ता है । अतः पति के अतिरिक्त पैसा कमाने की लालसा के खतिर सुजाता को अपने शील को दाँव पर लगाना पड़ता है ।

" **एक और द्रोणाचार्य** " की नायिकाएँ लीला और कृपी दोनों भी आर्थिक समस्या से तंग आ चुकी हैं । दोनों भी इस समस्या से छुटकारा पाना चाहती हैं । अपनी दरिद्रता से परेशान लीला और कृपी क्रमशः अपने पति अरविंद और द्रोणाचार्य को सुविधा -भोगी बनने के लिए प्रवृत्त करती है । जिसके तहत अरविंद प्रेसिडेंट के साथ समझौता कर प्रिसिंपल बन जाता है । तो द्रोणाचार्य कुरूकुल के आचार्य पद को स्वीकारता है । इस बदले अरविंद को प्रेसिडेंट के बेंटे खिलाफ नकल करते हुए पकड़े जाने की रिपोर्ट वापस लेनी पड़ती है तो द्रोणाचार्य को राजकीय अन्न की दासता स्वीकार करनी

पड़ती है । यहाँ पर हमें नजर आता है कि आर्थिक कठिनाईंयों में प्रतिकुल परिस्थितियों से लड़ने के लिए अपने पतियों का साथ देने के बजाए लीला और कृपी उन्हें समझौते के लिए प्रेरित करती हैं । अतः आर्थिक समस्या ने केवल लीला और कृपी के सत्व को ही नहीं हर लिया है अपितु अरविंद तथा द्रोणाचार्य को नपुंसक बना दिया हैं । जिन्होंने सुविधा और सुरक्षा को पाने के लिए अपना सत्व बेच दिया है ।

" पोस्टर " में दिखाई देता कि चैती गाँव के पटेल से सही मजदूरी पाने के लिए संघर्ष करती हैं क्योंकि पटेल उसके खेती तथा कारखाने में काम करनेवाले चैती तथा अन्य मजदूरों को रोजाना चार रूपए मजदूरी के बजाए एक रूपया मजदूरी देता है । जब चैती को इस शोषण का पता चलता है तब वह सारे मजदूरों में इसके प्रति जागरूकता निर्माण करती है । इसमें उसे अपने पति कल्लू का भी साथ मिलता है । दोनों मिलकर अन्य मजदूरों को समझाते हैं । जिस कारण सारे मजदूर अपना हक पाने के लिए हड़ताल कर देते है । पटेल भी इस क्रांती से डर जाता है और उनकी मजदूरी का एक रूपया से बढ़ाकर ड़ेढ रूपया कर देता है । चैती के हौसले तथा जागरूकता के कारण उन्हें पहली सफलता हासिल हो जाती है । अतः शेष ने यहाँ पर उन तमाम आदिवासी लोगों की व्यथा को प्रकट किया है जिनका आर्थिक, मानसिक,शारीरिक शोषण वहाँ के जमींदारों द्वारा सदियों से होता आ रहा है ।

अतः आर्थिक समस्या का विवेचन करने के बाद हमें यह नजर आता हैं कि " एक और द्रेणाचार्य " की नायिकाएँ लीला और कृपी को छोडकर बाकी सभी नायिकाएँ आर्थिक समस्या से जुझती हुई दिखाई देती है । उससे राह निकालते हुई नजर आती है ।

4 : 9 झूठी प्रतिष्ठा की समस्या :

आज के आधुनिक युग में सभी लोग इस समस्या के शिकार हो रहे हैं । हर कोई बड़ा आदमी बनना चाहता है । भौतिक सुख -सुविधाओं को पाना लोगों को अपने जीवन का लक्ष्य लगने लगा है। इसी धुन में हर कोई अपने आप को बडा आदमी साबित करने की दौड़ में दौडता चला जा रहा है। इसके लिए उसे कितने भी झूठे नकाब ओढ़ने पडे तथा कोई भी समझौता क्यों न करना पड़े उसे मंजूर है। इसी झूठी -प्रतिष्ठा के कारण आज पति -पत्नी, भाई - बहन, माँ - बेटी, पिता - पुत्र, दोस्त आदि में दुराव पैदा हुआ नजर आता है क्योंकि हर व्यक्ति आत्मकेंद्रित बनता जा रहा है । इसे अपने सुखों के सिवाय किसी दूसरे की परवाह नहीं है । अतः शेष ने भी अपने नाटकों के जरिए इसी समस्या का उद्घाटन किया हैं । उनके नाटकों की नायिकाएँ भी इस समस्या से जुझती हुई नजर आती हैं ।

शेष के " **रत्नगर्भा** " नाटक में हमें नजर आता हैं कि सुनील इला के कुरूप बनने पर उसकी पूर्ण रूप से उपेक्षा करता है । वह इला के त्याग, बलिदान,तपस्या को भूल जाता है । सुनील को कुरूप बनी इला से प्यार करना असंभव प्रतित होता है । इसी का फायदा उठाकर जब सुनील का दोस्त जगदीश उसे बहकाता है तब वह गलत रास्तों पर चलने लगता है । जिस कारण वह शराबी ,जुआरी और वेश्यागामी बना हुआ दिखाई देता हैं ।सुनील इस पर इतना पैसा लुटा देता है कि उसके उपर ढ़ेर सारा कर्जा हो जाता है । जिसे चुकाने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं । तब सुनील इला को उसके चाचा की मृत्यु के पश्चात मिले साठ हजार रूपयों को हथियाना चाहता है ।इसके लिए वह इला से अच्छा पति होने का नाटक करते हुआ नजर आता है । इतना ही नहीं सुनील अपनी झूठी प्रतिष्ठा बचाने के लिए इला को मारकर उसके बीमें की रकम हासील करने की चाह रखता है । इसके लिए वह इला को स्लो पॉयजन देने भी हिचखिचाता नहीं । अत : झूठी प्रतिष्ठा बचाने के लिए सुनील इला के साथ विश्वसघात तो करता ही हैं उसकी जान लेने की कोशिश भी करता है ।

" **रक्तबीज** " में दिखाई देता हैं कि पूर्वाद्ध की नायिका सुजाता का पति मि.शर्मा भौतिक सुख -साधनों का अपने पास होना प्रतिष्ठा का लक्षण मानता है । इसे हासिल करने के लिए मेहनत,ईमानदारी करने के बजाए झूठ, बेईमानी करने में सार्थकता मानता हुआ दिखाई देता हैं क्योंकि वह उन लोगों में से हैं जो मानते है कि मेहनत कर मंजिल पाना निरर्थक है । अगर जल्द से जल्द अमीर बनना है तो झूठ, बेईमानी का सहारा लेना ही पड़ता है । इसी के तहत वह अपने बॉस को खाने पे बुलाता है । मि. शर्मा घर को अच्छी तरह से सजाता हैं तथा व्हिस्की ,चीज, वेफर्स, आदि की तैयारी करके रखता हैं । पर सुजाता को यह दिखावा कतई पसंद नहीं है । वह मि. शर्मा से कहती है " उसके लिए इतनी जहमत । किसी से बर्फ के लिए कहो । किसी के घर से क्रॉकरी उधार माँग के लाओ । किराये का फर्निचर ....इस मौके के लिए खास साडी ।"[18] -------तब मि. शर्मा उसे समझाते हुए कहता हैं कि अगर नौकरी में प्रमोशन पाना है, फ्रिज, टि.व्ही., बंगला , कार आदि को हासिल करना है तो यह सब दिखावा करना बेहद जरूरी है । जिसकारण मि.माथुर पर अच्छा प्रभाव पड़े और वह उसे प्रमोशन दे दें । यहाँ हमें सुजाता का पति झूठी प्रतिष्ठा के पीछे भागता हुआ दिखाई देता है । जिसमें सुजाता की इच्छा ना होते हुए भी उसे अपना साथ देना पड़ा हैं ।

इसके बिल्कुल विपरी त स्थिति हमें " **एक और द्रोणाचार्य** " में दिखने को मिलती है । जहाँ कृपी और लीला सच्चाई की राह छोड़कर झूठी प्रतिष्ठा के पिछे भागती हुई नजर आती है । दोनों भी अपनी दरिद्रता से छुटकारा पाकर सुख - सुविधाओं को पाना चाहती हैं । इसी कारण कृपी द्रोणाचार्य को कुरूकुल के आचार्य पद को और लीला अरविंद को प्रिसिंपल के पद को स्वीकारने के लिए मजबूर

कर देती है । तथा " इस पद को कायम रखने के लिए द्रोणाचार्य ने एकलव्य और अरविंद ने चंद्र को बलि चढ़ाया ।"[19] कृपी और लीला इसे अन्याय न मानते हुए व्यावहारिकता मानती हुई नजर आती है । कृपी और लीला के इस समझौते के वजह से द्रोणाचार्य को द्रौपदी पर अत्याचार होते देखकर भी मौन रहना पडता है तो अरविंद को भी इसके ही कॉलेज की लड़की अनुराधा पर प्रेसिडेंट के बेटे को बलात्कार की कोशिश करते हुए रंगे हाथ पकडने पर भी चूप रहना पडता है । इस सब के बावजूद कृपी और लीला खुश नजर आती हैं क्योंकि भौतिक-सुविधा पाना ही वह जीवन का लक्ष्य मानती हैं । अतः कृपी और लीला घर, आभूषण, नौकर - चाकर आदि झूठी प्रतिष्ठा के खातिर अपने पति क्रमशः अरविंद और द्रोणाचार्य को गलत रास्ते पर चलने के लिए बाध्य करती हुई नजर आती हैं ।

" **कोमल गांधार** " में गांधारी को कुरूकुल की प्रतिष्ठा के खातिर अपना जीवन आहुति करना पड़ा है क्योंकि कुरूकुल को आवश्यकता थी राजरक्त से पैदा होनेवाले शरीर की जो कुरूकुल को आगे बढा सकें । यह तभी संभव था जब किसी राजकुमारी के साथ जल्द से जल्द अंध धृतराष्ट्र का विवाह किया जायें क्योंकि कामासक्त धृष्टराष्ट्र के संबंध एक दासी से अधिक दृढ होते जा रहे थे और उससे संतान उत्पन्न होती तो दासीपुत्र को राजगदद्दी पर बिठाने की नौबत आ जाती । इसी समस्या को हल करने के लिए गांधारी के साथ षड्यंत्र रचा जाता है । अतः झूठी प्रतिष्ठा को कायम रखने के लिए कुरूकुल के लोग गांधारी से विश्वासघात करते हुए नजर आते हैं ।

अतः शेष जी ने इस समस्या का उद्‌घाटन कर यह बताने की कोशिश की है कि यह समस्या प्राचीन काल से चली आ रही है । फिर भी लोग आज तक इसकी निरर्थकता ना समझते हुए उसे हासिल करने के लिए दौड़ते ही चले जा रहे हैं । अतः शेष जी ने ऐसे लोगों को इस निरर्थक दौड़ से आगाह करने की भरकस कोशिश अपने नाटकों के जरिए की है ।

4:10 दाम्पत्य संबंधों में तणाव की समस्या :

पारिवारिक जीवन का प्रमुख आधार दाम्पत्य जीवन है । परिवार में नारी के महत्व को बताते हुए डॉ. सूतदेव हंस लिखते है -" जननी,जाया और जीवन -संगीनी जैसे रूपों में वह परिवार की संचालिका है ।"[20] पति-पत्नी का आपसी प्यार,विश्वास, एक - दूसरे को समझने की क्षमता आदि पर दाम्पत्य जीवन निर्भर रहता हैं । मगर इन्हीं बातों की कमी हो तो दाम्पत्य संबंधों में तणाव निर्माण होते हैं । उसके अनेक कारण हैं अविश्वास, आर्थिक दुर्बलता, पत्नी की तथा पति की उपेक्षा,एक - दूसरे को समझने की कमी आदि । इन कारणों के कारण दाम्पत्य जीवन में दरार तो पड़ ही जाती है कभी-कभी यह संबंध खत्म होने की भी नौबत आती है । अतः दाम्पत्य जीवन में एक -दूसरे के प्रति विश्वास तथा

एक - दूसरे को समझ लेना बेहद जरूरी होता है । शेष के नाटकों की नायिकाओं को भी इन्ही कारणों के कारण इस समस्या का सामना करना पडा हैं ।

" **मूर्तिकार** " में नजर आता हैं कि आर्थिक कठिनाईंयों के कारण ललिता और शेखर के दाम्पत्य जीवन में तणाव निर्माण हुआ हैं क्योंकि शेखर अपनी कला को बेचकर उससे धन कमाना अपने कला के आदर्शों से गिरना मानता हैं । इस वजह से उन्हें आर्थिक कठिनाईंयों का सामना करना पड़ रहा हैं । घर में न कुछ खाने को हैं, न किरानेवाला किराना देने को तैयार है । हर तरफ उधारी बढ़ गयी है । छः महिने का किराया देना भी बाकी है । पर इन सब मुसीबतों की तरफ शेखर का बिल्कुल ध्यान नहीं है । वह अपनी कला को बेचकर धन कमाने के लिए राजी नहीं हैं । इसी कारण ललिता और शेखर में अक्सर झगड़े होते हैं । ललिता का मानना हैं कि जिस तरह मजदूर को अपनी मेहनत की कीमत माँगने का हक हैं उसी तरह शेखर का अपनी कला से पैसे कमाना गलत नहीं है । पर शेखर ललिता की यह बात नहीं मानता । तब आर्थिक कठिनाईंयों से त्रस्त ललिता शेखर को क्रोध में यह कहते हुए नजर आती हैं कि, " तो पडे रहो झूठे आदर्शों के पीछे । बने रहो दरिद्र नारायण --- और मेरे हाथों में भिक्षापात्र दे दो ।"[21] यहाँ पर नजर आता है कि आर्थिक कठिनाईंयाँ पति -पत्नी के बीच तणाव का कारण बनी हुई हैं ।

" **रत्नगर्भा** " नाटक में भी इला के दुर्घटनाग्रस्त हो कुरूप बनने पर उसके दाम्पत्य जीवन में दरार पड़ी हुई नजर आती है क्योंकि शरीर के सौंदर्य को महत्व देनेवाला सुनील कुरूप इला को स्वीकार नहीं पाता । वह इला का तिरस्कार करने लगता है । इला को छोड़ हर दूसरी औरत को वासना की दृष्टि से देखने लगता है । कामांध बना सुनील शराबी, जुआरी, वेश्यागामी बन जाता है । खुद डॉक्टर होकर भी सुनील अपने आप को इस पतन से रोक नहीं पाता । इतना ही नहीं सुनील इला को जहर देकर मारने की कोशिश करता है ताकि उसकी सारी संपत्ति तथा बीमें की रकम हासिल कर सके । साथ ही इला से भी छुटकारा मिलें । सौंदर्यवती इला से बेइंतहा प्यार करनेवाला सुनील उसके कुरूप बनने पर उसकी जान का दुश्मन बना नजर आता है । अतः यहाँ कुरूपता ने दाम्पत्य जीवन में तणाव तथा दुराव निर्माण किया हुआ नजर आता है ।

" **रक्तबीज** " में हमें नजर आता है कि सुजाता को अपने शील की बलि चढ़ाकर मिलनेवाली सुख -सुविधाएँ मंजूर नहीं हैं । पर ऐशो आराम की जिंदगी की लालसा रखनेवाला मि.शर्मा सुजाता की कोई बात नहीं मानता । वह अपने बॉस के साथ अनैतिक संबंध रखने के लिए सुजाता को मजबूर करता है । जिससे मि.शर्मा को नौकरी में तरक्की के साथ-साथ पलैट,फ्रिज, टी.व्ही.,कार आदि प्राप्त होता है । पर सुजाता इस स्थिति को स्वीकार नहीं पाती । वह मि.शर्मा से नफरत करने लगती है ।

जब मि.शर्मा सुजाता और उसके बॉस की तस्वीरों के बदले मैनेजर का ओहदा पाने के लिए बॉस को ब्लैकमेल करने जाता है तो सुजाता के लिए मि.शर्मा का यह व्यवहार असहनीय हो जाता है । तब जिंदगी से निराश हुई सुजाता नींद की गोलियाँ खाकर मौत को गले लगा लेती है । अतः मि. शर्मा की किसी भी कीमत पर भौतिक-सुविधाओं को पाने के अतिरिक्त महत्वाकांक्षा उसके दाम्पत्य जीवन में तणाव तो पैदा करती ही है अपितु सुजाता के मौत की भी जिम्मेदार होती है ।

" **एक और द्रोणाचार्य** " में कृपी और लीला के दाम्पत्य संबंधों में आर्थिक दरिद्रता के कारण तणाव नजर आता है क्योंकि आर्थिक दरिद्रता से परेशान कृपी अपने परिवारिक जीवन से असंतुष्ट है। उसके पारिवारिक जीवन में ना तो अन्न का ठिकाना है ना ही अच्छे वस्त्र का ठिकाना है । अश्वत्थामा के दूध माँगने पर उसकी ख्वाईश भी कृपी पूरी नहीं कर पाती क्योंकि उसके घर में दूध तक नहीं है । तब कृपी झूठ का सहारा लेकर आटे का घोल बनाकर अश्वत्थामा को दूध कहकर देती हुई नजर आती है । इन्हीं अभावों से त्रस्त कृपी द्रोणाचार्य के साथ अक्सर लड़ती हुई नजर आती है । उसका द्रोणाचार्य से यह कहना --" कहाँ मर गयी अकड़ तुम्हारी ? होंगे बड़े आचार्य ! लेकिन उससे अन्न नहीं आ जाता -- कपडे नहीं आ जाते ।" [22] उनके बिकट आर्थिक स्थिति को जाहिर करते है साथ ही उनके तणावपूर्ण दाम्पत्य जीवन को भी दर्शाते है ।

यही बात लीला के गृहस्थी में भी दिखाई देती है , जो अपनी गृहस्थी से ऊब चुकी है क्योंकि घर की जरूरतें इतनी है कि वह अरविंद की तनख्वाह से पूरी नहीं हो पाती । इसीसे परेशान लीला अरविंद को समझौते कि रास्ते पर चलने के लिए मजबूर करती है तो अरविंद इससे इंकार करता हुआ दिखाई देता है । तब लीला का अरविंद से यह कहना " जानते हो किस तरह घसीट रही हूँ तुम्हारी गृहस्थी की गाडी ? एक -एक पैसे की खींचतान मची हुई है । " [23] उनके बिकट आर्थिक हालातों को जाहिर करते है । तथा उससे उत्पन्न तणावपूर्ण दाम्पत्य जीवन को भी दर्शाते है । अतः यहाँ कृपी और लीला का दाम्पत्य जीवन आर्थिक कठिनाईयों के कारण तणावपूर्ण बना हुआ दिखाई देता है ।

" **कोमल गांधार** " में गांधारी के साथ किया गया विश्वासघात उसके दाम्पत्य जीवन में तणाव निर्माण करता हुआ दिखाई देता है क्योंकि गांधारी को लगता है कि कम से कम उसके होनेवाले पति ने तो इस बात की जानकारी उसे देनी चाहिए थी कि वह अंधा है । इससे क्षोभित गांधारी इसके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों के साथ साथ धृतराष्ट्र को भी क्षमा नहीं कर पाती । जब उसे धृतराष्ट्र से ही पता चलता है कि, उसने अपने दासी के जरिए विवाह के पूर्व यह सच्चाई बताने का प्रयास किया था । तब यह जानकार भी गांधारी धृतराष्ट्र के प्रति अपना तिरस्कार खत्म नहीं कर पाती । तथा उसे क्षमा नहीं कर पाती । जिस वजह से धृतराष्ट्र भी उससे दूर रहने लगता है । धृतराष्ट्र की कामासक्ति

फिर से उसे दासी की ओर ले जाती है तो गांधारी और धृतराष्ट्र के दाम्पत्य संबंधों में और भी दुराव आ जाता है । अतः यहाँ दाम्पत्य जीवन में किया हुआ एक धोखा गांधारी और धृतराष्ट्र के स्वस्थ दाम्पत्य संबंधों को पनपने ना देते हुए नजर आता है ।

अतः इससे पता चलता है कि स्वस्थ दाम्पत्य जीवन में पति - पत्नी का एक दूसरे पर विश्वास, प्यार तथा एक - दूसरे को समझने की कोशिश आदि बातें कितनी एहमियत रखती है ।

निष्कर्ष :

नायिकाओं के समस्याओं का विवेचन करने के बाद यह पता चलता है कि शेषजी ने नारी जीवन की ज्यादा से ज्यादा समस्याओं को समाज के सामने रखने की कोशिश की है। शेषजी ने केवल पारिवारीक या सामाजिक समस्याओं का ही उद्घाटन नहीं किया बल्कि आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक तथा दाम्पत्य जीवन में आनेवाली समस्याओं को भी बड़ी सफलता से अभिव्यक्ति दी है। इन नायिकाओं के सामने जो समस्याएँ दिखाई देती हैं वह आज के स्त्री के सामने भी नजर आती है। इसी कारण शेषजी की अभिव्यक्ति यथार्थवादी लगती है।

शेषजी ने अपने नाटकों के जरिए स्त्री के विविध पहलुओं का उद्घाटन किया है। उन्होंने " **रत्नगर्भा** " , "**बीन बाती के दीप** ", " **रक्तबीज** ", नाटक की नायिकाओं के जरिए स्त्री के जुल्म, फरेब, धोका आदि बातों को सहते हुए भी अपने पारिवारीक जीवन को बचाने की जी -- जान से कोशिश करनेवाली नायिकाओं की समस्याओं का उद्घाटन किया है। तो दूसरी ओर " **मूर्तिकार** ", " **तिल का ताड़** ", " **बाढ़ का पानी** ", आदि नाटकों की नायिकाओं की समस्याओं का चित्रण किया है। साथ ही " **कालजयी** ", " **अरे ! मायावी सरोवर** ", " **पो स्टर** ", " **चेहरे** ", की नायिकाओं के जरिए सिर्फ अपने पर ही नहीं अपितु समाज और समाज के लोग आदिओं पर होते अन्याय को देख उसके खिलाफ आवाज उठाते वक्त आनेवाली समस्याओं का भी उद्घाटन किया है। शेषजी ने हर क्षेत्र में चाहे वो घर हो, ऑफीस हो, समाज हो स्त्री की भूमिका को जाना है, समझा है। इसी कारण उसके सामने आनेवाली समस्याओं को भी वे जान सकें हैं। उसे अपने नाटकों द्वारा समाज के सामने रख सकें है।

शेष जी ने अपने नाटकोंद्वारा स्त्री की अनेक समस्याओं को अभिव्यक्ति देकर समाज को जागृत करने तथा लोगों को सोचने के लिए प्रेरित किया है ताकि वो समझे की स्त्री ना ही अबला है ना ही गुलाम वह तो सहचारिणी है जिसके साथ-साथ रहने में ही मानवजाति का कल्याण है।

अतः शेष जी के नाटकों में उल्लेखित नायिकाओं की समस्याओं का विवेचन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उन्होंने स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं अपने नाटकों के जरिए

अभिव्यक्ति देकर समाज को जागृत तो किया ही है साथ ही खुद स्त्री को भी उसकी शक्ति का, उसके सत्व का एहसास दिलाया है।

चतुर्थ अध्याय

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) डॉ.प्रकाश जाधव " डॉ शंकर शेष का नाटक साहित्य " पृष्ठ - 81

2) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 396

3) डॉ.सुरेश गौतम, डॉ.वीणा गौतम " राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष " पृष्ठ - 142

4) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावाली " खंड :- 2: पृष्ठ - 117

5) डॉ.सुनीलकुमार लवटे " नाटककार शंकर शेष " पृष्ठ - 53

6) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 41,42

7) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावाली " खंड :- 2 पृष्ठ - 186

8) डॉ.शंकर शेष " कोमल गांधार " पृष्ठ - 66,67

9) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावाली " खंड :- 2 पृष्ठ - 73

10) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 29

11) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 3 पृष्ठ -278

12) डॉ.सुनीलकुमार लवटे " नाटककार शंकर शेष " पृष्ठ -51

13) डॉ.शंकर शेष " कोमल गांधार " पृष्ठ -51

14) डॉ.योगेश सूरी " यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ पृष्ठ -184

15) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 85

16) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 235

17) डॉ.सूतदेव हंस " उपन्यासकार चतुरसेन के नारी पात्र " पृष्ठ - 3

18) सं.डॉ.विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 85

19) डॉ.शंकर शेष " एक और द्रोणाचार्य " पृष्ठ - 44

20) डॉ.शंकर शेष " एक और द्रोणाचार्य " पृष्ठ - 15